ॐ

वर्ष-10, अंक-3, 1-15 फरवरी, 2025 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

ISSN 2456-1207

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

मूल्य : 15 रुपये
कुल पृष्ठ 40

इस अंक में पढ़ें

राष्ट्र ने मनाया 76वां गणतंत्र दिवस, अर्थव्यवस्था के लिए वरदान साबित होता महाकुंभ, विश्व समागम व एकता सूत्र का दर्शन कराता कुंभ, भारत-अमेरिका संबंधों के नए युग की शुरुआत, वर्ष-2024 में दिवंगत हुए महानुभावों को श्रद्धांजलि, हरियाणा में अग्निवीरों को आरक्षण, गॉड सेव अमेरिका, संगठन शास्त्र चालीसा का लोकार्पण आदि अनेक महत्वपूर्ण लेख एवं देश-विदेश से खबरें तथा सभी स्थायी स्तंभ।

गणतंत्र दिवस परिशिष्ट

मनुष्य को अपनी कमजोरियां किसी को भी नहीं बतानी चाहिए–आचार्य चाणक्य

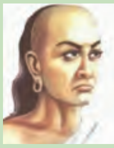

चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 10, अंक : 3, 1-15 फरवरी, 2025

अनुक्रम

05 सम्पादक के नाम पत्र
06 सम्पादक की कलम से

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय

08 राष्ट्र ने मनाया 76वां गणतंत्र दिवस : आर.पी. तोमर
10 वह वीर है (कविता) : डॉ संगीता पाल
10 गणतंत्र दिवस (कविता): बलविंदर बालम
11 अर्थव्यवस्था के लिए भी वरदान साबित होता महाकुंभ : श्वेता गोयल
15 वर्ष 2024 में दिवंगत हुए विशेष महानुभावों को श्रद्धांजलि : विजय कुमार
18 भारत-अमेरिका संबंधों के नए युग की शुरूआत : योगेश कुमार गोयल

राज्यों से

20 हरियाणा– हरियाणा में अग्निवीरों को आरक्षण : विशाल शर्मा

नई दिल्ली कार्यालय
मुख्यालय :
'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
कॉरपोरेट कार्यालय :
321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लॉट-2, सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली-110077
सम्पर्क : 09871909808, 08571841127
ई-मेल : chanakyavarta@gmail.com

उत्तर क्षेत्र कार्यालय
एस.सी.ओ. 24, द्वितीय तल, सेक्टर-11, पंचकूला, हरियाणा-134112
सम्पर्क : **0172-4672424, 09466988764**

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यालय
116, कॉमर्स हाउस, एम.जी. रोड, फैंसी बाजार निकट ऐक्सिस बैंक, गुवाहाटी, असम-781001
सम्पर्क : **09101834214, 9864337619**

दक्षिण क्षेत्र कार्यालय
13, नल्लन्ना मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600 079
सम्पर्क : **9342302248, 9941245660**

संरक्षक
डॉ. योगेन्द्र नारायण (पूर्व महासचिव, राज्यसभा)
कुलाधिपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय
लक्ष्मीनारायण भाला (वरिष्ठ साहित्यकार)

परामर्श मंडल
पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
(कुलाधिपति, रोमा विश्वविद्यालय)
वेणुगोपालन (वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादक मंडल
सम्पादक : **डॉ. अमित जैन**
कार्यकारी सम्पादक : **आर.पी. तोमर**
राजनीतिक सम्पादक : **ओम प्रकाश पाल**
उप सम्पादक : **सारांश कनौजिया**

संस्थापक राष्ट्रीय समन्वयक
स्व. घनराज भाम्बी
(वरिष्ठ पत्रकार–रक्षा सेनाएँ एवं अर्द्ध सैनिक बल)

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रभारी
दिलीप बैनर्जी, कोलकत्ता

आर्थिक सलाहकार मंडल
सी.ए. मन्त्रेश्वर कर्ण
सी.ए. स्वीटी जैन

अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार मंडल
धर्मपाल महेन्द्र जैन, टोरंटो, कनाडा
कैलाश कंदोई, सिलीगुड़ी

विधि सलाहकार मंडल
अंकुर जैन (अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट)
योगेश कुमार (चेयरमैन, नेचर व्यू)
अजय नागर (स्वतंत्र पत्रकार)

राज्य प्रभारी
उत्तर क्षेत्र प्रभारी—**विशाल शर्मा**, चंडीगढ़
पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रभारी—**राजीब अगस्ती**, गुवाहाटी
दक्षिण क्षेत्र प्रभारी—**नवरतन पींचा जैन**, चेन्नई
पश्चिमी क्षेत्र प्रभारी—**आशा सिंह देवासी**, मुबई
पूर्वी क्षेत्र प्रभारी—**प्रकाश बेताला**, भुवनेश्वर
कर्नाटक प्रभारी—**हर्ष गोयल**, बेंगलुरु
तमिलनाडु प्रभारी—**जे.पी. ललवानी**, चेन्नई
मध्य प्रदेश प्रभारी—**लखनलाल चौरसिया**, भोपाल
पश्चिमी उ.प्र. प्रभारी—**अंकित जैन**, मेरठ

चिंतन

22 भविष्य की दृष्टि-3 : कृष्णानंद सागर
कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन-94
23 आचार्य चाणक्य ने बताया विद्यार्जन का महत्व : रमेश चंद्र जैन

व्यंग्य

24 गॉड सेव अमेरिका : धर्मपाल महेंद्र जैन

विविध

25 'संगठन शास्त्र चालीसा' का लोकार्पण : हेमन्त उपाध्याय
28 तो जिंदगी हो जाए सफल! : प्रो. गोपाल शर्मा

समाचार जगत

29 चाणक्य वार्ता पाक्षिकनामा
30 खबरों में देश-विदेश : सोनम जैन
31 उत्तर भारत की खबरें : विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन
32 पूर्वोत्तर भारत की खबरें : राजीब अगस्ती/ हुरुई जेलियांग
35 दक्षिण भारत की खबरें : वेद प्रकाश पांडेय/ ईश्वर करुण
36 पश्चिम भारत की खबरें : आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

जॉब अलर्ट

37 सरकारी नौकरियों में अवसर : सी.ए. स्वीटी जैन

देश भर में 'चाणक्य वार्ता' के प्रतिनिधि

राज्य ब्यूरो चीफ

धीरेन्द्र मिश्र, नई दिल्ली
डॉ. अमर सिंहल, जयपुर, राजस्थान
शैलेन्द्र जैन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
अजय भट्ट, देहरादून, उत्तराखंड
डॉ. गुलाब सिंह, यमुना नगर, हरियाणा
शरद छिब्बर, चंडीगढ़
रमेश गुप्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर
गुरुवचन सिंह, शिमला, हिमाचल प्रदेश
सतीश सिंह, गुवाहाटी, असम
रतन सूत्रधार, अगरतला, त्रिपुरा
तुंबन रीबा 'लीली', ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश
हुरुई जेलियांग, दीमापुर, नागालैंड
डॉ. ललमुआनओमा साइलो, आईजोल, मिजोरम
किरन कुमार, इंफाल, मणिपुर
डॉ. टी.बी. छेत्री, गंगटोक, सिक्किम
वेद प्रकाश पाण्डेय, बेंगलुरु, कर्नाटक
ईश्वर करुण, चेन्नई, तमिलनाडु
जी. गौरीशंकर, हैदराबाद, तेलंगाना
उमा महेश्वर रेड्डी, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश
श्रीकांत कण्णन, पुडुचेरी
अरुण लक्ष्मण, तिरुवन्तपुरम, केरल
किशोर आपटे, मुंबई, महाराष्ट्र
विनायक भिषे, सतारा, महाराष्ट्र
विनोद कुशवाहा, भोपाल, म.प्र.
सियानंद मंडल, पटना, बिहार
गौतम चौधरी, राँची, झारखंड
अशोक नंदी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
राजेन्द्रपाल शर्मा, पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार

नेशनल सोशल मीडिया हेड
हेमन्त उपाध्याय, जयपुर

नेशनल मार्केटिंग हेड
धीरेन बरोट, अहमदाबाद

जिला ब्यूरो चीफ
अविनाश पाठक, नागपुर, महाराष्ट्र
अनमोल जैन, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
सुनीता गोस्वामी, मथुरा, उत्तर प्रदेश
डॉ. डी.के. अस्थाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
संजय सक्सेना, कानपुर, उत्तर प्रदेश
सोनम जैन, दिल्ली
ए. रणजीत, आईजोल, मिजोरम

नोट : देश के कोने-कोने में आप अपने समाचार पत्र हॉकर के माध्यम से घर बैठे 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका मँगा सकते हैं। यदि आपको पत्रिका मिलने में कठिनाई होती है, तो आप 'चाणक्य वार्ता' के मुख्य प्रसार कार्यालय, नई दिल्ली में 08586858185 पर संपर्क कर सकते हैं अथवा ***chanakyavarta@gmail.com*** पर ई-मेल भी कर सकते हैं।

प्रसार प्रबंधक

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय रहेंगे।

इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसाइटी, नई दिल्ली का पाक्षिक प्रकाशन

चाणक्य वार्ता मीडिया प्रा.लि. का उपक्रम

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमित जैन के लिए विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद से मुद्रित एवं ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : **अमित जैन।**

वेबसाइट : www.chanakyavarta.com

चाणक्य वार्ता में डॉ अमित जैन द्वारा लिखा गया लेख बहुत बढ़िया है। इस लेख को साझा करने के लिए धन्यवाद। लेखक ने गणेश प्रसाद जी वर्णी (1874-1961) की पुस्तक का हवाला दिया है। यह पुस्तक 1900 के दशक की शुरुआत में मध्य भारत में जैन धर्म की स्थिति के बारे में जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत है। अब बेहतर सड़कों के साथ, नैनागिरि के साथ-साथ पूरे मध्यप्रदेश के अन्य तीर्थों की यात्रा करना बहुत आसान हो गया है।

प्रो. यशवंत मलैया
शिक्षाविद, यू.एस.ए.

नैनागिरि जी के बारे में बहुत विस्तृत और जानकारी पूर्ण लेख।

सुलेख सी. जैन, पीएचडी
लास वेगास, नेवादा, यूएसए

चाणक्य वार्ता के 16 जनवरी 2025 के अंक में गणतंत्र दिवस के अवसर पर पत्रिका के संपादक डॉ. अमित जैन का संपादकीय पढ़ा। उन्होंने अपने संपादकीय में गण और तंत्र के बीच बढ़ती दूरी पर चिंता व्यक्त की है। जितना मैं समझ पा रहा हूं, गण से उनका अर्थ जनता और तंत्र से उनका मतलब शासन व प्रशासन से है। मेरा अपना अनुभव है कि कई बार केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा तो अच्छी योजना बनाई जाती है। लेकिन उसका पालन उस तरह से नहीं हो पाता, जैसा कि होना चाहिए था। इसलिए जन और तंत्र के बीच दूरी लगातार बढ़ती ही जा रही है। जब तक हम स्वयं नहीं सुधरेंगे, तब तक तंत्र ठीक नहीं होगा।

सुभाष रेड्डी
हैदराबाद, तेलंगाना

चाणक्य वार्ता में प्रवासी भारतीय दिवस पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषण पर डॉ. भरत कुमार की रिपोर्ट पढ़ी। इस बार यह आयोजन ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। ये प्रवासी भारतीय विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से विदेशों में भारतीय संस्कृति के एक नए अध्याय की शुरूआत हुई है। विदेशों में भारत की आज जो अच्छी छवि है, उसमें प्रधानमंत्री मोदी के साथ-साथ इन प्रवासी भारतीयों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। वे सशक्त हैं, इसलिए भारत को भी बल मिलता है।

सोमनाथ भारती
ललितपुर, उत्तर प्रदेश

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर अपने विचार या कोई सुझाव हमें हमारी ई-मेल आईडी response50123@gmail.com पर भेज सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
—सम्पादक 'चाणक्य वार्ता'

चाणक्य वार्ता के 16 जनवरी 2025 के अंक में केन-बेतुआ नदी जोड़ो परियोजना की आधारशिला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा रखे जाने पर विनोद कुशवाहा की रिपोर्ट पढ़ी। लेखक के अनुसार इस परियोजना की मांग लगभग 105 वर्ष पुरानी थी। यह एक लम्बा संघर्ष रहा होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक रैली में कहा था कि वो जिस परियोजना का शिलान्यास करते हैं, उसका उद्घाटन भी करते हैं। इसलिए उम्मीद है कि यह परियोजना समय पर पूरी होगी और आस-पास के लोगों को इसका लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

रमेश पाटिल
मुंबई, महाराष्ट्र

दिल्ली विधानसभा चुनाव पर चाणक्य वार्ता के अंक में डॉ. विनोद बब्बर का लेख पढ़ा। लेखक ने अपने लेख का शीर्षक एक प्रश्न को बनाया है। मेरा उत्तर यह है कि इस बार शायद ऐसा नहीं होगा। यदि अरविंद केजरीवाल की सत्ता में फिर वापसी होती है, तो भी उनकी सीटें पहले से कम आएंगी। इसका कारण यह है कि आम आदमी पार्टी बनने के बाद केजरीवाल के साथ जुड़े अधिकांश लोग अब उनसे अलग हो चुके हैं। इसी अंक में उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर आरपी तोमर का लेख पढ़ा। मेरी जानकारी के अनुसार यदि सिर्फ अयोध्या की बात करें, तो कुछ वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार भगवान श्री राम लगभग 7000 वर्ष पहले यहां के राजा थे। ऐसे में उत्तर प्रदेश का इतिहास कम से कम 7000 वर्ष पुराना तो रहा ही होगा।

कुलवंत कौर
अमृतसर, पंजाब

चाणक्य वार्ता में त्रिपुरा, मणिपुर और मेघालय के स्थापना दिवस पर राजीब अगस्ती का लेख और सांसद राजू बिष्ट के गोरखाओं के मुद्दों को उठाने की बात को अपने लेख का विषय बनाते हुए लिखा गया आमोस छेत्री का लेख पढ़ा। पूर्वोत्तर के तीनों राज्यों की अपनी अलग पहचान है। इनकी अपनी अलग विशेषता है। इसको कुछ शब्दों में लिख पाना संभव नहीं है। मुझे लगता है कि जिन लोगों को पर्यटन में रुचि है, उनको इन तीनों प्रदेशों सहित पूर्वोत्तर राज्यों में जाने पर विचार जरुर करना चाहिए।

जयेश पटेल
सूरत, गुजरात

चाणक्य वार्ता के 16 जनवरी 2025 के अंक में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नशा मुक्ति अभियान पर विशाल शर्मा का लेख पढ़ा। नशा युवाओं को खोखला कर रहा है। हरियाणा आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों का राज्य है। लेकिन इस कारण कई युवा भटक गए हैं और नशे की लत में डूब गए हैं। इस समस्या के निदान के लिए मुख्यमंत्री सैनी का यह अभियान बहुत अधिक सहायक होगा। इसी अंक में कश्मीर का नाम काश्यपनीर करने की संभावना पर रमेश गुप्ता का लेख पढ़ा। आज जब हम पुरानी संस्कृति की ओर वापस जाने का प्रयास कर रहे हैं। तब यह कदम एक सराहनीय पहल होगी।

आनंद ठाकुर
शिमला, हिमाचल प्रदेश

चाणक्य वार्ता के 16 जनवरी 2025 के अंक में दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रमा की दो पुस्तकों के लोकार्पण पर हेमंत उपाध्याय की रिपोर्ट पढ़ी। मैंने चाणक्य वार्ता में ही काफी पहले सिनेमा से जुड़े डॉ. रमा के लेख पढ़े हैं। शिक्षा के साथ ही सिनेमा की उनकी समझ बहुत अच्छी है। इसी अंक में सीएसआर रिसर्च फाउंडेशन के द्वारा आयोजित श्रीकांत जोशी स्मृति व्याख्यानमाला पर धीरेन बरोट की रिपोर्ट पढ़ने को मिली। श्रीकांत जोशी महान व्यक्तित्व के धनी थे। इस प्रकार के आयोजन हमें उनके दिखाये रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

हरिशंकर द्विवेदी
बनारस, उत्तर प्रदेश

विश्व समागम व एकता सूत्र का दर्शन कराता प्रयाग महाकुम्भ

ये सत्य सनातन धर्म की शक्ति और महत्ता ही है जहाँ देश के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, प्रदेश के मुख्यमंत्री संतो के साथ संगम में स्नान कर उनके चरणों में बैठकर देश की सुख-शांति का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। यह सब हमें महाकुम्भ में देखने को मिल रहा है। कुंभ, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारतीय संस्कृति की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोता है। यह उत्सव विभिन्न भाषाओं, चिंतन परंपराओं, प्रथा और विश्वासों, सामाजिक व धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक चिंतन के बीच एक पवित्र सेतु का कार्य करता रहा है। देश में आज विभिन्न धर्म और संस्कृतियों के बीच खुद को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ है। ऐसे समय में कुंभ जैसे आयोजन भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सहनशीलता को अपने अंदर समेटे हुए हैं। तेरह जनवरी को बुधादित्य महायोग के दिन का आंकड़ा एक करोड़, पचहत्तर लाख, तो समाप्ति तक 40 करोड़ को पार कर सकता है।

महाकुम्भ में भगवा की बहुतायत, प्रकृति में उपस्थित हर रंगों की लहराती ध्वजाएं, पताकाएं और अपने विशिष्ट वेशभूषा में साधु-संत समेत देशी-विदेशी जन ऐसा विहंगम दृश्य प्रस्तुत कर रहे है, जिसका वर्णन आसान नहीं है। लगातार बजते घंटे-घंटाल, शंखों की गूंजती ध्वनि, मंत्रोच्चार, 24 घंटे पवित्र गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम में स्नान करते असंख्य लोग, यज्ञशालाओं से निकलती हवन कुंड की अग्नि। भजन-कीर्तन के साथ प्रवचनों और हेलीकॉप्टरों द्वारा की जा रही पुष्प वर्षा से निर्मित वातावरण और वहां जाने वालों के चेहरों पर दिख रहे भाव अद्भुत है। इतिहास में शुभ और अशुभ एक साथ चलते हैं। शुभ को राष्ट्रजीवन से जोड़ना और लगातार संस्कारित करना संस्कृति है। यहाँ धर्म, दर्शन, संस्कृति, परंपरा और आस्था राष्ट्रजीवन के नियामक तत्व हैं। ये पांच तत्व राष्ट्रजीवन को ध्येय और शक्ति देते हैं। महाकुम्भ इन्हीं पांचों तत्वों की अभिव्यक्ति है। करोड़ों लोग बिना किसी निमंत्रण के प्रयाग पहुंच रहे हैं। महाकुम्भ समागम संस्कृति प्रेमियों का महाउल्लास है। ऋग्वेद में इसकी 'इमे गंगे यमुने सरस्वती' गाकर स्तुति की गई है। इंडोनेशिया के प्रसिद्ध ग्रंथ 'ककविन' में प्रयाग कुम्भ की महिमा गाई गई है। तुलसीदास ने इसे 'क्षेत्र अगम गढ़, गाढ़ सुहावा' कहा है। मार्क टेन ने 1895 के कुम्भ को देखकर अकल्पनीय और सुन्दरतम बताया था। लिनलिथगो ने 1942 का विशाल कुम्भ देखकर पंडित मदन मोहन मालवीय से पूछा था कि इतने लोगों को निमंत्रित करने में बड़ा धन और श्रम लगा होगा? मालवीय जी ने उन्हें बताया था कि सिर्फ दो पैसे का पंचांग देखकर ही यहाँ लाखों लोग आए हैं।

प्रयागराज महाकुम्भ में मोदी और योगी सरकार ने लोगों की रिकॉर्ड उपस्थिति का आंकलन करते हुए हर संभव व्यवस्था करने की कोशिश की है। इसलिए पूरे कुंभ नगर का विस्तार 4000 हेक्टेयर भूमि पर करके उसे 25 सेक्टरों में बांटा गया है, डेढ़ लाख से अधिक टेंट लगाये गये है, 44 घाटों पर स्नान की व्यवस्था हुई हैं जो 12 किलोमीटर लंबाई में फैली हुई है। हमारे ऋषि-मुनियों ने जिस संस्कृति व परंपरा का उद्गम किया था, वह गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम है, उसी को साकार करता अलग-अलग विचारधाराओं, पंथों, मतों, भाषाओं, क्षेत्रों, रंग-रूपों, जातियों, संप्रदायों से जुड़े जनसमूह, सब वहां जाकर वाकई एक हो रहे हैं। उनमें कही कोई भेद और कोई दूरी नज़र नहीं आ रही है। महाकुंभ पर्व संपूर्ण विश्व के जन-जन को एक करने, यानी 'मातृभूमि पुत्रो अहम पृथिव्या' की अथर्ववेद की अवधारणा को साकार करने का पर्व सिद्ध हो रहा है। प्रयागराज को तीर्थराज कहा गया है और यह निर्वाण की भूमि मानी गयी है। यहाँ पुरुषार्थ चातुष्ट्य-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चारों का विपुल भंडार है। माना गया है कि यहां आने से सब पाप धुल जाते हैं और त्रिवेणी के तट से अंतर्मन के सारे विकार, क्लेश, दोष मिट जाते हैं। देश में अंग्रेजी काल से ही अच्छी तिथियों और मुहूर्त को लेकर विवाद रहे हैं, किंतु आम जनमानस के लिए संगम का आरंभ कब से हुआ, किसने किया, किस काल में था, इनके न कोई अर्थ थे, न हैं और न आगे होंगे। यह हमारे महान पूर्वजों के दिये गये संस्कार और चरित्र हैं जिसने राजनीतिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक, आर्थिक व्यवस्थाओं और ढांचों की प्रतिकूलताओं से परे किसी न किसी रूप में आज तक ऐसी मौलिकता के साथ इन सबको कायम रखा है। यही हमारी अंतःशक्ति है जिस पर भारत विश्व के लिए आदर्श व दिशा देने वाला देश बन रहा है।

संसदीय लोकतंत्र में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। केंद्र की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार और प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार पूर्व की सरकारों से गुणात्मक रूप से भिन्न प्रमाणित हो रहे है। इतने विशाल और व्यापक जनसमूह वाले लंबे आयोजन का प्रबंध और विश्व व सांस्कृतिक समागम कराकर मोदी-योगी ने लोगों का दिल जीत लिया है। भारतीय मनीषियों ने सही दावा किया है कि एकमात्र यही भूमि है जिसमें संपूर्ण विश्व को प्रेरणा देकर सुख, शांति, समृद्धि के रास्ते पर लाने की क्षमता है। महाकुंभ जैसे आयोजन में बगैर कुछ बोले संपूर्ण विश्व में यह संदेश जा रहा है कि कैसे एक साथ इतनी बड़ी संख्या में अलग-अलग पंथों, संप्रदायों, जिनके बीच घोर मतभेद और कुछ के मध्य संघर्ष रहे हैं, सब एकत्र होकर आत्मोद्धार, समाज और विश्व कल्याण के भाव से संगम में स्नान-यज्ञ आदि कर रहे हैं? इसका उत्तर है–यह भारत की देश में और बाहर जबरदस्त ब्रांडिंग है। इन सबसे न केवल यह धारणा खंडित हो रही है कि भारत को पश्चिम द्वारा एक राष्ट्र राज्य का स्वरूप दिया गया, इसकी कोई प्राचीन सभ्यता और ज्ञात इतिहास नहीं, बल्कि यह भी स्थापित हो रहा है कि यह प्राचीन सभ्यता व महान विरासत के ठोस आधारों पर खड़ा आधुनिकतम सोच व व्यवस्थाओं से सामंजस्य बिठाने वाला परिपूर्ण देश है। ऐसे ही समग्र चरित्र वाले देश की महत्ता और नेतृत्व क्षमता स्वीकृत हो सकती है। राजनीतिक नेतृत्व की यही भूमिका होनी चाहिए थी जो आज केंद्र से राज्य तक दिख रही है। दुनियां में ऐसा कोई भी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक संगठन नहीं है, जो 40 करोड़ लोगों को जुटाने और उनके बीच अनुशासन बनाये रखने का दावा कर सके, यह उपलब्धि केवल महाकुम्भ के हिस्से में ही है।

–डॉ अमित जैन